

डॉ. मधुकर गंगाधर का उपन्यास साहित्य

संपादक
डॉ. वरुण कुमार तिवारी



कॉपीराइट	:	सुरक्षित
संस्करण	:	प्रथम
वर्ष	:	2017 ई.
प्रकाशक	:	मुकुल प्रकाशन रघुवंशी निकेतन (सानिध्य श्री आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ मन्दिर), छत्तरपुर, मेहरौली, नई दिल्ली-110074 मो. 9350208252, 9971768669
आवरण	:	राजकमल
मूल्य	:	350/- रुपये
मुद्रक	:	शक्ति प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32
ISBN No.	:	978-93-83253-19-7

Dr. Madhukar Gangadhar Ka Upanyas Sahitya

Editor : Dr. Barun Kumar Tiwari

Price : Rs. 350/-

अनुक्रम

भूमिका/ मधुकर गंगाधर की औपन्यासिक चेतना	7
डॉ. वरुण कुमार तिवारी	
1. सुबह होने तक : जनपक्षधरता का प्रमाण-पत्र	31
मधुकर सिंह	
2. जयगाथा: समय विशेष का कथा डॉक्यूमेंटेशन	35
महेश दर्पण	
3. प्रयोगधर्मी उपन्यास की शुरुआत	41
डॉ. गंगा प्रसाद विमल	
4. जटिलता से मुक्त उपन्यास	46
डॉ. खगेंद्र ठाकुर	
5. उपन्यास के फ्रेम में 'गाँव' और 'गरीब'	52
डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ	
6. जसवंत नगर : एक लव स्टोरी	55
डॉ. हरीश नवल	
7. अनुपेक्षणीय एवं पठनीय ग्रंथ : ध्रुवांतर	60
निशांतकेतु	
8. एक सशक्त पीरियड नॉवेल : ध्रुवांतर	64
डॉ. दीनानाथ सिंह	
9. मधुकर गंगाधर के राजनीतिक उपन्यास	73
डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी	
10. दूरगामी लक्ष्य का सृजनात्मक संधान	88
विजयकांत	
11. कृषि-संस्कृति की व्यथा-गाथा	95
शरण बंधु	
12. नारी सशक्तीकरण का समर्थ रेखांकन	101
डॉ. श्रीपति कुमार गुप्त	
13. मध्यमवर्गीय त्रासदियों को उकेरते मोतियों वाले हाथ	107
डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	
14. मूल्यबद्ध जीवन का औपन्यासिक प्रयास	112
डॉ. बहादुर मिश्र	

मधुकर गंगाधर के राजनीतिक उपन्यास

डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

मधुकर गंगाधर हिंदी की उस वरिष्ठ कथा-पीढ़ी के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं जिन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में भी अपने कृतित्व में बेहतर दुनिया का स्वप्न संजोने और व्यवस्था के हर उस अंधेरे मोड़ पर जूझने वाले पात्रों को नायकत्व प्रदान करना अभी छोड़ा नहीं है। दरअसल, उन्हें अपने समय और समाज की गहरी पहचान है। मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी सहज आस्था है। सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन की आहटों को उन्होंने बड़े करीब से और पूरी संवेदनशीलता के साथ देखा-सुना और समझा ही नहीं वरन समाज विरोधी ताकतों की शिनाख्त और मुखालफत भी की है। एक संवेदनशील रचनाकार के नाते उन्होंने अपनी पूरी सकारात्मक सोच, रचनात्मक गतियों और प्रवृत्तियों को बड़ी शिद्दत से कथाकृतियों में अभिव्यक्ति दी है। यह कहना उचित होगा कि मधुकर गंगाधर ने अपनी वैचारिकी के तहत अपना पूरा जीवन जिया है और आज भी उनमें छटपटाहट बची हुई है। गाँव-जवार के सामाजिक जीवन और वहाँ के सैकड़ों चरित्रों से वे रू-ब-रू हुए हैं। उन्होंने राजनीति और समाज की विकृतियों एवं विडम्बनाओं पर तलख चोट की है। वास्तव में अपने आस-पास की दुनिया (गाँव) का यथार्थ रचते हुए वे एक बेहतर समाज भी रच रहे होते हैं। उनका मन अपने ग्रामांचल की मिट्टी, हवा-पानी और वहाँ के लोगों के सुख-दुःख, तनाव, चुनौतियों, साहस से बहुत अन्तरंग भाव से सम्बद्ध है। उनकी संवेदना में राजनीतिक आदर्श की जड़ें बहुत गहरी हैं। आज भी वे वहाँ लौटना चाहते हैं। पर, अब उनका अख्तियार नहीं है। राजेन्द्र सिंह (जयगाथा) और गोपीमामा (उत्तरकथा) के माध्यम से अपनी सारी भड़ास/पीड़ा निकालकर वे भले ही शांत हो लें, किन्तु नई सदी में राजनीति के दुष्चक्र से समाज को मुक्ति कहाँ?